



अप्रैल: 2023



वर्ष : 6 अंक : 7

सिफरी मासिक समाचार

होली की शुभकामाएं

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



“बंदरगाह में खड़ा जलयान सुरक्षित होता है। जलयान वहां खड़े रहने के लिए नहीं बने होते हैं।” थामस एक्किनास

थामस एक्किनास (1225-1274) एक महान दार्शनिक थे जिनके सिद्धांतों को प्राचीन और नवीन युग के बीच की कड़ी माना जाता है। उन्होंने ईसाई धर्मशास्त्र और अरस्तू के दर्शन सिद्धांतों का व्यापक विश्लेषण किया। एक्किनास के सिद्धांत को वर्ष 1917 में चर्च के आधिकारिक दर्शन के रूप में अपनाया गया। थामस एक्किनास के कथन मुझे “कम्फर्ट ज़ोन” वाली मनःस्थिति का बोध करता है। “कम्फर्ट ज़ोन” एक मनोवैज्ञानिक अवस्था है जिसमें एक व्यक्ति अपने वर्तमान स्थिति में आराम महसूस करता है। वह किसी भी नए अनुभवों में शामिल नहीं होना चाहता या कोई नई चुनौती नहीं लेना चाहता है। लेकिन हम जितना अधिक अपने सुविधाओं या फिर आरामदेह परिवेश में फंसते जाते हैं, उतना ही हम अपनी अधिक से अधिक उन्नति के अवसर खो देते हैं। अपने कम्फर्ट ज़ोन से बाहर निकलने के लिए इच्छाशक्ति और मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता होती है क्योंकि इससे बाहर निकलना हमारे सर्वांगीण व्यक्तिगत विकास, नई चीजें सीखने और अंततः सफलता की ओर ले जाता है।



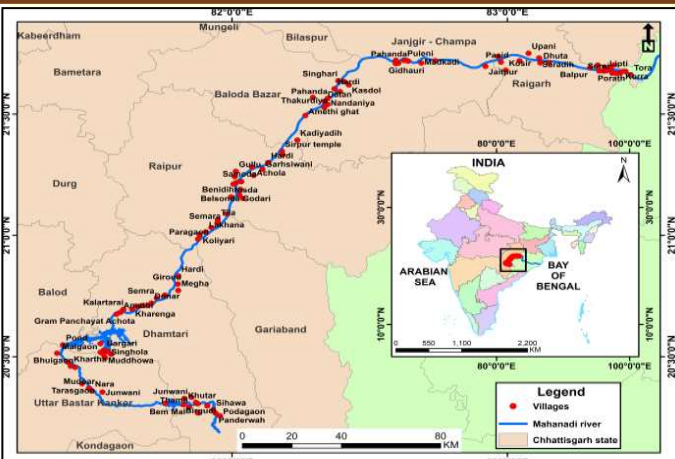
अप्रैल का महीना एक अलग अनुभूति लेकर आता है जो देश के अलग-अलग राज्यों के विविध त्योहारों को समाहित करता है। जैसे पश्चिम बंगाल में नए वर्ष की और केरल में बिशु की धूमधाम। ओड़ीशा राज्य अपना स्थापना दिवस मनाता है तो गुड फ्राइडे और हैपी ईस्टर भी इस माह के विशेष पर्व हैं।

अप्रैल 2023 के इस अंक में संस्थान की गतिविधियों के साथ महानदी पर एक फोकस लेख दिया गया है।

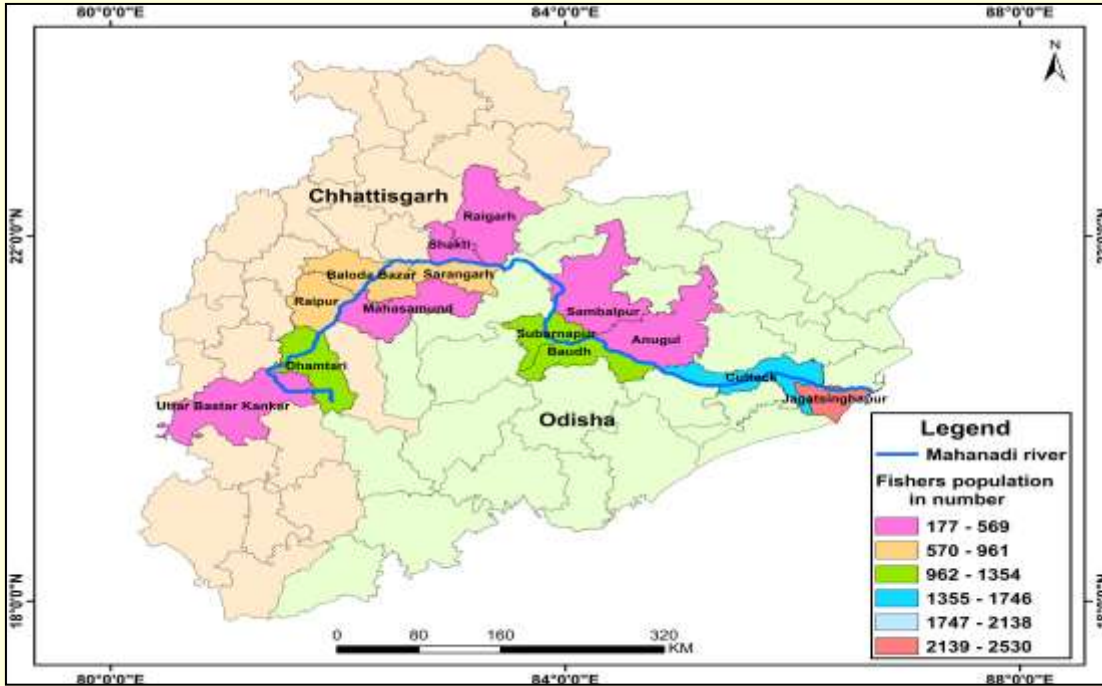
शुभकामनाओं सहित,

बिबेक

(बसन्त कुमार दास)



महानदी का मछली उत्पादन और प्रग्रहण आंकलन

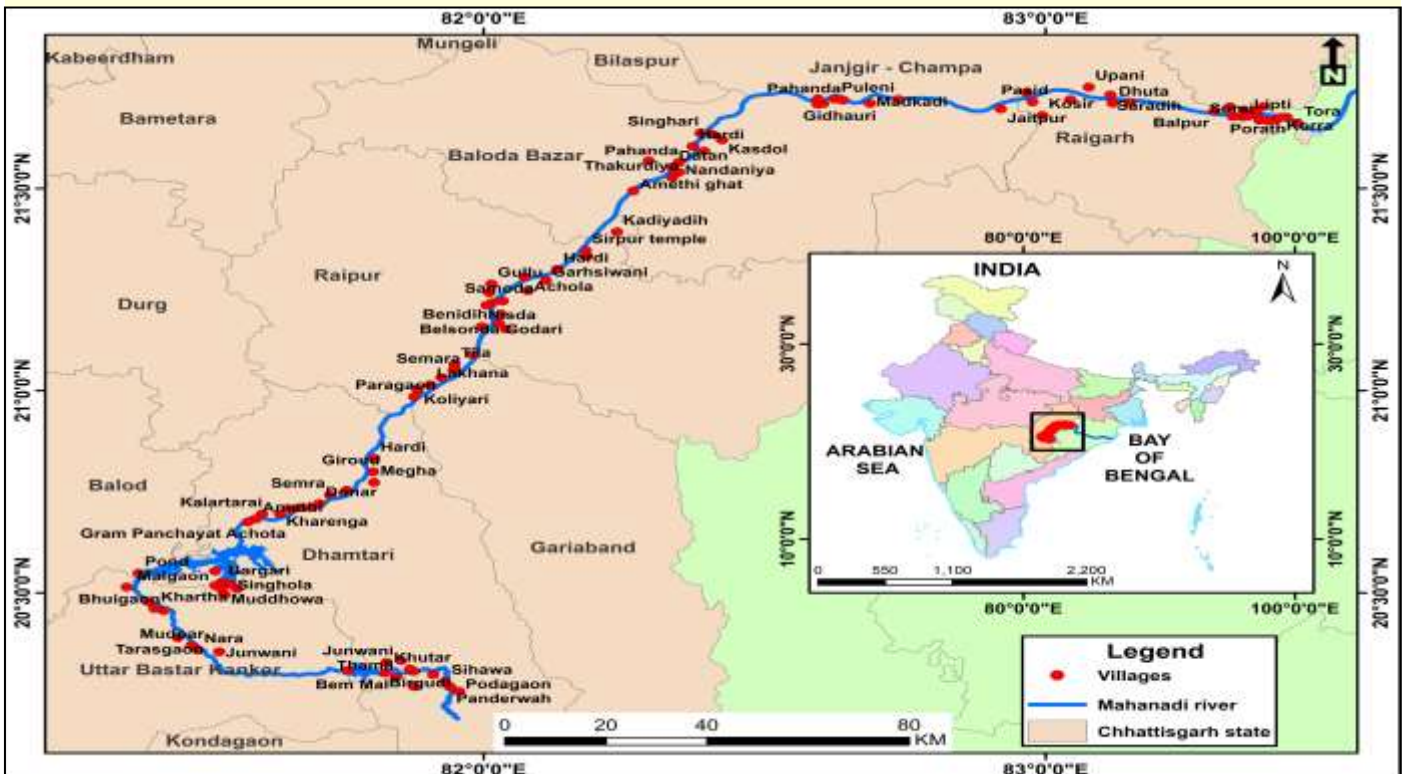


भारत के पूर्वी तट पर स्थित महानदी सबसे बड़े जल निकासी बेसिन में से एक है, जिसका 45 प्रतिशत भाग ओडिशा और 55 प्रतिशत भाग छत्तीसगढ़ में फैला हुआ है। यह नदी पारादीप (ओडिशा) में बंगाल की खाड़ी से पहले छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में सिहावा पहाड़ियों में शुरू होकर लगभग 857 किमी से अधिक की यात्रा करती है।

भाकृअप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी

अनुसंधान संस्थान ने महानदी नदी में संस्थान परियोजना के तहत कुल 146 मछली पकड़ने वाले गांवों का सर्वेक्षण किया गया था, जिनमें छत्तीसगढ़ से 90 गांव (6 जिलों) और ओडिशा से 56 गांव (6 जिलों) सम्मिलित थे। सर्वेक्षण के लिए नदी को तीन भागों में विभाजित किया गया - छत्तीसगढ़ में ऊपरी खंड, ओडिशा में मध्य खंड और निचला खंड।

इस अध्ययन में मछली पकड़ संबंधित सूचनाएँ लैंडिंग केन्द्रों, स्थानीय मछुआरों और इस नदी क्षेत्र के किनारे स्थित मछली बाजारों से प्राप्त की गई थी। इसके अतिरिक्त, मछुआरों की संख्या, मछली पकड़ने के विभिन्न प्रकार के उपकरण, नाव और उनके संचालन के तरीकों की जानकारी प्रत्येक गांवों से एकत्र की गई। महानदी से मछली पकड़ने के लैंडिंग पैटर्न से पता चलता है कि कैटफिश प्रजातियाँ जैसे ब्लागो अट्टू, स्पेराटा एओर, एस.सिंघला, यूट्रोपिकथिस वाचा और सिलोनिया सिलोंडिया प्रचुर तौर पर (36.4 %) उपलब्ध थे। इसके बाद मेजर कार्प (22.6 %), म्यूरल (12.5 %), माइनोज़ (9.3 %) थे। अन्य छोटी देशी मछलियाँ (8.5 %), विदेशी (8.3 %) और झींगे (2.4 %) पाये गए। वर्तमान संदर्भ





में यह देखा गया है की विदेशी प्रजातियों की उपलब्धता बढ़ रही है जिनमें *ओरियोक्रोमिस नाईलोटिकस* और *पंगासियेनोडोन हाइपोथलमस* प्रचुर तौर पर उपलब्ध हैं। इसका कारण आसपास के जल क्षेत्रों से पालित मछलियों का नदी में पलायन भी हो सकता है।

प्रजातियों के लैंडिंग आंकड़ों के आधार पर मत्स्य लैंडिंग और पकड़ प्रति इकाई प्रयास (सीपीयूई) के मौसमी पैटर्न की जांच की गई। महासमुंद (छत्तीसगढ़) में 461 टन से लेकर जगतसिंहपुर (ओडिशा) में 2561 टन तक मछली की लैंडिंग हुई, जबकि महानदी नदी से कुल कैच का अनुमान हर साल 15134 टन आँका गया था। सबसे अधिक मछली पकड़ जून से अक्टूबर महीनों के दौरान होता है। गर्मियों में, महानदी नदी की औसत पकड़ प्रति इकाई प्रयास (CPUE) 0.18 किग्रा प्रति मछुआरा प्रति दिन से लेकर 9.84 किग्रा प्रति मछुआरा प्रति दिन तक था। सर्दियों में यह प्रयास 1.89 से 6.87 किग्रा प्रति मछुआरा प्रति दिन के बीच और मानसून में, यह 1.83 से 18.88 किग्रा प्रति मछुआरा प्रति दिन के बीच था।

महानदी में संचालित मछली पकड़ने में लकड़ी की नावें (प्लैंक निर्मित और डगाउट) स्थानीय रूप से डोंगा या नाव और फुलाए हुए टायर ट्यूब (छत्तीसगढ़) के रूप में जानी जाती थीं। महानदी नदी में उपयोग किए जाने वाले फिशिंग गियर में गिलनेट, ट्रैमेल नेट, कास्ट नेट,





ड्रगनेट, स्कूप नेट, हुक और लाइन और ट्रैप शामिल हैं। स्पीयर फिशिंग को स्थानीय रूप से चिरन ओरलोहा कहा जाता है। यह एक स्वदेशी गियर जाल है जिसका उपयोग ओडिशा में नदी के मध्य खंड में किया जाता है। मॉनसून और मॉनसून के बाद के मौसम के दौरान नदी के पूरे खंड में ट्रैप बहुत ही सामान्य गियर होते हैं। बाँस से बने जाल बेलनाकार, आयताकार, वर्गाकार और कटे हुए शंकु के आकार की टोकरियाँ होती हैं जिनका उपयोग मुख्य रूप से झींगा मछली पकड़ने और छोटी मछलियों को पकड़ने के लिए किया जाता है। उड़ीसा में महानदी के मध्य और निचले हिस्सों में विस्फोटक डायनामाइट और प्रदूषित जल निकायों का उपयोग करके मछली को पकड़ना देखा गया है। इस तरह की मछली पकड़ने के तरीके से जलीय पारिस्थितिक तंत्र नष्ट हो जाती है तथा अंधाधुंध तरीके से जीवों को मारने से मछली पकड़ कम हो जाती है।



संस्थान का 77वां स्थापना दिवस मछली, मछुआरें और आईसीएआर-सिफरी: राष्ट्र की सेवा में 77 वर्ष



संस्थान का 77वां स्थापना दिवस, 17 मार्च, 2023 को भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान, बैरकपुर के मुख्यालय में मनाया गया। सन 1947 से, आईसीएआर-सिफरी मत्स्य पालन के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए अंतर्स्थलीय खुले पानी में अनुसंधान, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम कर रहा है।

इस अवसर पर श्री अवनीन्द्र सिंह, आईएएस, सचिव, मत्स्य पालन विभाग, पश्चिम बंगाल मुख्य अतिथि के रूप में; डॉ. धृति बनर्जी, निदेशक, जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, डॉ. डी. बी. शाक्यवार, निदेशक, आईसीएआर-एनआईएनएफटी और डॉ. गौरंगा कर, निदेशक, आईसीएआर-क्रिजाफ सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर 150 किसान एवं उद्यमी तथा स्थानीय विद्यालयों के 150 विद्यार्थी उपस्थित थे।

स्थापना दिवस कार्यक्रम का शुभारंभ केक काटकर किया गया, इसके बाद शांति के प्रतीक कबूतरों को छोड़ा गया। डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान ने अपने स्वागत भाषण में अंतर्स्थलीय खुले जल में मत्स्य पालन बढ़ाने के विभिन्न पहलुओं पर पिछले





76 उपयोगी वर्षों के दौरान संस्थान द्वारा किये गये कार्य और उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी, जिसको पूरे भारत में मछुआरा समुदायों द्वारा अपनाया गया ।

श्री अवनींद्र सिंह, आईएएस, सचिव, पश्चिम बंगाल सरकार, मत्स्य विभाग, ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में भाकृअनुप-सिफरी के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को 77वें स्थापना दिवस पर बधाई दी। उन्होंने नयी आने वाली पश्चिम बंगाल अंतर्स्थलीय मत्स्य नीति की जानकारी दी और राज्य में मत्स्य पालन के विकास के लिए पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों पर जोर दिया। डॉ. धृति बनर्जी, निदेशक, जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, कोलकाता ने 77वें स्थापना दिवस पर बधाई दी और दर्शकों



से देश में मत्स्य क्षेत्र के विकास के समर्थन के लिए भाकृअनुप-सिफरी की सराहना की। उन्होंने विशाल स्तर पर मत्स्य जैव विविधता के संरक्षण का आग्रह किया। इस अवसर पर डॉ. डी.बी. शाक्यवार, निदेशक, आईसीएआर-एनआईएनएफटी, कोलकाता और डॉ. गौरंगा कार, निदेशक, आईसीएआर-क्रिजाफ, बैरकपुर ने भी सभी को संबोधित किया ।

इस अवसर पर नीलांजलि (हिंदी पत्रिका), सिफरी मासिक समाचार, और तेलंगाना राज्य के जल निकायों के मानचित्रण नामक पुस्तक का विमोचन किया गया ।



150 किसानों और उद्यमियों की उपस्थिति के साथ किसान-वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया गया। प्रगतिशील मछली किसानों ने अपने ज्ञान को अन्य प्रतिभागियों के साथ साझा किया। उनके सवालों का जवाब वैज्ञानिकों ने दिया।

स्थानीय स्कूली बच्चों को विभिन्न संस्थान की विकसित तकनीकों के बारे में जिसमें आईओटी पर आधारित तकनीकें भी शामिल हैं जानने का अवसर प्रदान करने के लिए एक संस्थागत दौरा का आयोजन किया गया था, जिसमें वे अपने भविष्य के कैरियर लक्ष्यों को विकसित करने में मदद ले सकें। आईसीएआर-सिफरी के अधिकारियों और कर्मचारियों, मत्स्य किसानों, उद्यमियों, छात्रों, सहित 500 से अधिक प्रतिभागियों ने 77 वें स्थापना दिवस कार्यक्रम में भाग लिया।





77वां स्थापना दिवस के कुछ सुनहरे पल



आईसीएआर-सिफरी ने पश्चिम बंगाल के मत्स्य विभाग के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया



आईसीएआर-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (सिफरी) बैरकपुर ने 1 मार्च 2023 को पश्चिम बंगाल के मत्स्य निदेशालय के साथ बांकुरा के कंगसाबती जलाशय में केज कल्चर के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया।

समझौता ज्ञापन कोलकाता के मीन भवन में मत्स्य पालन के माननीय प्रभारी मंत्री श्री बिप्लव राँय चौधरी की उपस्थिति में, सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास और मत्स्य पालन विभाग के निदेशक डॉ. विश्वनाथ, आईएएस, द्वारा हस्ताक्षर किए गए।

माननीय मंत्री श्री बिप्लव राँय चौधरी, ने पश्चिम बंगाल में मत्स्य विकास के लिए आईसीएआर-सिफरी के साथ अधिक सहयोग पर जोर दिया। सिफरी के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने माननीय मंत्री को पश्चिम बंगाल के विभिन्न हिस्सों में संस्थान द्वारा की जा रही विभिन्न गतिविधियों और आजीविका वृद्धि कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी।

इस समझौता ज्ञापन के हिस्से के रूप में, 32 सिफरी जीआई केज में मछली पालन के साथ कंगसाबती जलाशय में केज कल्चर गतिविधियां शुरू की जाएंगी।



इस विकास परियोजना का उद्देश्य केज कल्चर के माध्यम से मछली के उत्पादन में प्रसार करना, मत्स्य निदेशालय, संसाधन उपयोगकर्ता समुदायों और सहकारी समितियों की क्षमता को मजबूत करना है।

संस्थान ने वेस्ट टू वेल्थ प्रोडक्व पर इंस्टीट्यूट इंडस्ट्री इंटरफेस मीट का आयोजन किया



आईसीएआर-सिफरी ने 15 मार्च 2023 को आईसीएआर के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विकसित रेशमकीट प्यूपा के अधिक से अधिक परिणाम के लिए किसानों, उद्यमियों और उद्योगों तक पहुंचने के लिए वेस्ट टू वेल्थ उत्पादों पर मछली फीड आधारित एक दिवसीय संस्थान उद्योग इंटरफेस मीट का आयोजन किया।

बैठक का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास, डॉ. के. सत्यनारायण निदेशक, सीएसबी-सेंट्रल तसर सिल्क रिसर्च एंड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, रांची और उद्योग प्रतिनिधियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी ने अपने उद्घाटन भाषण में इस बात पर जोर दिया कि भारत अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन का सबसे बड़ा उत्पादक है। अंतर्स्थलीय जल से मछली उत्पादन में तेज वृद्धि (10.14%) का अनुभव हाल में ही किया जा रहा है। मछली उत्पादन के बढ़ते चलन ने अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन और जलीय कृषि क्षेत्र में मछली आहार की बड़ी मांग पैदा की है। संस्थान दशकों से गैर-पारंपरिक, कृषि-औद्योगिक कचरे और कीट-आधारित भोजन से मछली आहार विकसित कर रहा है। संस्थान ने शराब (मदिरा) उद्योग और ब्लैक सोल्जर फ्लाई से अपशिष्ट का उपयोग सिफरी केजग्रो और बीएसएफ फ्लोटिंग फिश फीड का विकास किया है।

उन्होंने कहा कि केंद्रीय रेशम बोर्ड के सहयोग से आईसीएआर-सिफरी ने सीटीआरटीआई, रांची द्वारा वित्तपोषित परियोजना "मानव और पशु उपभोग और कंपोस्टिंग के लिए रेशमकीट प्यूपा उत्पादों का उपयोग और विविधीकरण" के तहत मिठे पानी में मत्स्य पालन के लिए योग्य सामान्य प्रचलित प्रजातियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए मछली के चारे के विकास के लिए रेशमकीट प्यूपा भोजन का उपयोग किया। संस्थान ने रेशम के कीड़ों के प्यूपा मील का उपयोग करते हुए विभिन्न फीड आकारों (1, 2, 3 और 4 मिमी गोली आकार) के साथ सभी आकार जैसे फ्राई, अंगुलिका, किशोर और प्रो-आउट चरणों के लिए अपशिष्ट से फीड विकसित किया है।

डॉ. के. सत्यनारायण, निदेशक, सीएसबी-सीटीआरटीआई, रांची ने अपने संबोधन में कहा कि सीआईएफआरआई ने हमारे संस्थान के साथ शहतूत और तसर रेशम कीट प्यूपा से उप-उत्पाद के विकास पर काम किया है और मछली के विभिन्न चरणों के लिए चार मछली फीड विकसित किए हैं। उन्होंने कहा कि भारत के दक्षिण, पूर्व और उत्तर पूर्व भाग में कच्चा माल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। सीटीआरटीआई प्यूपा कचरे से औद्योगिक उपयोग के लिए तेल जैसे अन्य उपोत्पादों पर भी काम कर रहा है।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक ने उद्योग के प्रतिनिधियों के समक्ष मत्स्य आहार रेशमीन का विवरण प्रस्तुत किया, और तुलनात्मक बहुस्थान, बहुसांस्कृतिक प्रणाली और विभिन्न प्रकार के रेशमकीट प्यूपा भोजन-आधारित मछली फीड के संयोजन फीड के परिणामों को भी साँझा किया।



उन्होंने पारंपरिक फीड सामग्री की अनुपलब्धता और मछली के भोजन के संभावित विकल्प के रूप में रेशमकीट प्यूपा के उपयोग के औचित्य और दायरे के बारे में अपनी चिंता व्यक्त की।

इंटरएक्टिव सत्र के दौरान, अवंती फीड्स, दीपक नेक्स्ट जेन फीड्स, अनुपम फीड्स, एबीआईएस फीड्स के प्रतिनिधियों ने रेशम के कीड़ों के प्यूपा-आधारित मछली आहार से संबंधित विभिन्न प्रश्न पूछे, जिनका आविष्कारक टीम ने संतोषजनक उत्तर दिया। चिंता के जवाब में, डॉ. सत्यनारायण ने कहा कि रेशमकीट प्यूपा मील रेशम उत्पादन के दौरान किसी भी कीटनाशक अनुप्रयोग और अन्य रासायनिक प्रदूषकों से मुक्त है। और उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि क्लस्टर आधारित दृष्टिकोण को अपनाते हुए रेशमकीट प्यूपा को मत्स्य आहार उद्योग के लिए कच्चे माल के रूप में स्थायी रूप से बनाये रखा जा सकता है। इस प्रकार, रेशम कीट प्यूपा भोजन को फीड तैयार करने के लिए हरी मछली फीड घटक के रूप में नामित किया जा सकता है।

अवंती फीड प्रा. लिमिटेड, अनमोल फीड, एबीआईएस ग्रुप, गीतांजलि फीड्स लिमिटेड, नेक्स्टजेन फीड प्रा. लिमिटेड आदि, सहित आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और ओडिशा के दस मत्स्य आहार उद्योगों उद्यमियों के प्रतिनिधियों सहित आईसीएआर-सिफरी के वैज्ञानिकों और



सीएसबी-सीटीआरटीआई के वैज्ञानिकों के साथ-साथ पचास प्रतिभागियों ने बैठक में भाग लिया।

मत्स्य संवर्द्धन और प्रबंधन प्रभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एम. ए. हसन ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. डी. के. मीना, के. जेना, गणेश चंद्रा, और जे. सिंह के साथ संस्थान के तकनीकी कर्मचारियों, सहायक कर्मचारियों और अनुसंधान विद्वानों के सहयोग के साथ किया गया।

प्रशिक्षण के माध्यम से बिहार के दरभंगा जिले के मत्स्य कृषकों का कौशल-विकास और क्षमता-निर्माण



गंगा नदी की एक सहायक नदी, बागमती नदी के ठीक पूर्व में स्थित होने के कारण, बिहार का दरभंगा जिला अन्तर्स्थलीय खुले पानी का उपयोग करता है। जलीय संसाधनों की बहुतायत होने के बावजूद, इस जिले में मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त मात्रा में मछली नहीं है। मछुआरों की आय दोगुनी करने के उद्देश्य से कौशल- विकास और क्षमता-निर्माण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में 21-27 मार्च, 2023 के दौरान आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर में " अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में बिहार राज्य के मत्स्य विभाग के एक प्रतिनिधि के साथ कुल मिलाकर 30 सक्रिय मछली किसानों ने भाग लिया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। और उन्होंने स्थायी आजीविका को सुरक्षित करने के लिए मछुआरों को अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के कई पहलुओं में कौशल हासिल करने की प्राथमिकता पर जोर दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने मछुआरों से आग्रह किया कि वे प्रौद्योगिकी के बारे में जानकर और उसका उपयोग करके अधिकतम उत्पादन और उत्पादकता के लिए अपने उपलब्ध संसाधनों का पता लगाएं। डॉ. दास ने प्रशिक्षुओं को भारत के अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन में उपलब्ध नए उद्यमिता के अवसरों के बारे में भी जानकारी दी।

इस जिले में, आजीविका बढ़ाने के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य विकास की बहुत संभावनाएं हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों और अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के बीच मौजूद ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण की खाई को पाटना था। कोर्सवर्क में तालाब निर्माण और प्रबंधन, मिट्टी

और जल रसायन, प्रेरित प्रजनन, नर्सरी और तालाब प्रबंधन, समग्र मछली पालन, सजावटी मछली पालन, मछली चारा प्रबंधन, रोग प्रबंधन, आर्थिक मूल्यांकन, प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना का अवलोकन आदि जैसे विषयों पर व्याख्यान शामिल थे।

फील्ड ट्रिप में ईस्ट कोलकाता वेटलैंड कालना प्रोग्रेसिव फिश फार्म, आईसीएआर- सीफा, कल्याणी फिश फार्म, सजावटी मछली बाजारों आदि का दौरा शामिल था। उन्हें संस्थान के रीसर्चुलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम, और बायो-फ्लोक इकाइयों के बारे में भी जानकारी दी गई। विभिन्न प्रकार के आवश्यकता-आधारित विषयों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के अलावा,





सजावटी हैचरी इकाइयाँ, और फीड मिल, मौलिक जल गुणवत्ता पैरामीटर, स्थानीय रूप से सुलभ फीड सामग्री का उपयोग करके मछली फीड की तैयारी, मछली रोगजनकों की पहचान और उनके संबंधित उपचारात्मक उपाय, आदि भी उन्हें बताया गया।

फीडबैक सत्र में प्रशिक्षुओं ने उनकी समग्र संतुष्टि व्यक्त की। अपनी समापन टिप्पणी में, संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास, ने किसानों से आग्रह किया कि वे अधिक उत्पादन को एकीकृत करने के लिए इस कार्यक्रम के दौरान सीखे गए ज्ञान का उपयोग करें। समापन कार्यक्रम में सम्मानित अतिथि के रूप में बांग्लादेश के प्रसिद्ध मत्स्य वैज्ञानिक डॉ. बिनॉय चक्रवर्ती शामिल रहें। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ए.के. दास, डॉ. अपर्णा रॉय और डॉ. दिबाकर भक्त ने किया।



'अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम



आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर में 27-29 मार्च, 2023 के दौरान बेरहामपुर, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल के मछली किसानों की आय को दोगुना करने के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 3-दिवसीय कौशल विकास और क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ए. टी. एम. ए. द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम में कुल 18 सक्रिय मछली किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और उन्होंने स्थायी आजीविका को सुरक्षित करने के लिए मछुआरों को अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के कई पहलुओं में कौशल हासिल करने की प्राथमिकता पर जोर दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने मछुआरों से आग्रह किया कि वे प्रौद्योगिकी के बारे में जानकर और उसका उपयोग करके अधिकतम उत्पादन और उत्पादकता के लिए अपने उपलब्ध संसाधनों का पता लगाएं।

पाठ्यक्रम सामग्री में अन्तर्स्थलीय खुले पानी की पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन, तलछट और जल रसायन, तालाब प्रबंधन, प्राकृतिक मछली खाद्य जीव और खुले पानी में उनका महत्व, सजावटी मत्स्य पालन, मछली चारा प्रबंधन, रोग प्रबंधन, जैसे विषयों पर व्याख्यान शामिल थे। उन्हें संस्थान की सजावटी हैचरी इकाइयों और फीड मिल के साथ-साथ आवश्यकता-आधारित विषयों की एक विविध सरणी में प्रशिक्षण दिया गया, जैसे कि मौलिक जल गुणवत्ता पैरामीटर, स्थानीय रूप से उपलब्ध फ्रीड का उपयोग करके मछली फ्रीड की तैयारी सामग्री, मछली रोगजनकों की पहचान और उनके संबंधित उपचारात्मक उपाय आदि। फीडबैक सत्र में प्रशिक्षुओं ने उनकी समग्र संतुष्टि व्यक्त की। अपनी समापन टिप्पणी में, डॉ.मो. अबुल हसन, एचओडी, एफईएम डिवीजन, ने किसानों को इस प्रशिक्षण के दौरान सीखे गए ज्ञान का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि अधिक से अधिक उत्पादन हो सके। डॉ. ए.के. दास और डॉ. दिबाकर भक्त ने कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समन्वय किया।



मुख्य शोध उपलब्धियां

- बिहार में कोशी नदी खंड और ओरंग राष्ट्रीय उद्यान, असम की आर्द्रभूमि का सर्वेक्षण किया गया। इस दौरान कोशी नदी (साहेबान से नवादा क्षेत्र तक) से 57 मछली प्रजातियां और असम से स्वदेशी फिन-फिश की 56 प्रजातियां दर्ज की गईं।
- कर्नाटक के नेत्रवती-गुरुपुर मुहाना क्षेत्र का भू-स्थानिक मानचित्र (22 पारिस्थितिक मापदंडों के साथ) विकसित किया गया।
- देश के समस्त नदियों में घुलित ऑक्सीजन पर एक भू-सांख्यिकीय पूर्वानुमान मानचित्र विकसित किया गया है। इससे घुलित ऑक्सीजन संचालित नदीय मात्स्यिकी प्रबंधन में सहायता मिलेगी।
- फरवरी 2023 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित मछली लैंडिंग 6.930 टन था, जो फरवरी 2022 की तुलना में कुल मछली पकड़ में 90.44 प्रतिशत की वृद्धि को दिखाता है।
- फरवरी 2023 में पटना, फरका और नवद्वीप में गंगा नदी से कुल मछली लैंडिंग क्रमशः 0.550, 1.06 और 0.318 टन दर्ज की गई।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 4-6 मार्च 2023 को परिषद अधीनस्थ संस्थानों के निदेशकों तथा कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपति की वार्षिक बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिक ने 6 मार्च 2023 को एग्रिनोवेट इंडिया लिमिटेड द्वारा आयोजित आईसीएआर इंडस्ट्री इंटरफेस बैठक में भाग लिया।
- आईसीएआर-सीएमएफआरआई, कोच्चि में 11-12 मार्च 2023 को आईसीएआर की एनआईसीआरए परियोजनाओं के मात्स्यिकी घटक के तहत विभिन्न मत्स्य अनुसंधान संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के अनुसंधान कार्यो की समीक्षा बैठक में आईसीएआर-सिफरी के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 14-15 मार्च 2023 के दौरान केआईआईटी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ के भुवनेश्वर चैप्टर द्वारा आयोजित "स्थायी दुनिया के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी" पर राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने नई दिल्ली में दिनांक 14-17 मार्च, 2023 के दौरान "बीज से बाजार की रणनीतियों की दिशा में भविष्यवादी दृष्टिकोण" पर 15वीं आईयूपीएसी

अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस ऑफ क्रॉप प्रोटेक्शन केमिस्ट्री में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 16-18 मार्च 2023 के दौरान पश्चिम बंगाल पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, बेलगछिया, कोलकाता द्वारा आयोजित एपीसी रॉय स्मारक विज्ञान मेले में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 18-19 मार्च 2023 को एनएएससी परिसर, नई दिल्ली में आयोजित ग्लोबल मिलेडू सम्मेलन में भाग लिया।

विविध

- कंसावती जलाशय, बांकुरा, पश्चिम बंगाल में पिंजरा पालन के लिए 1 मार्च 2023 को मत्स्य विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। मत्स्य पालन विभाग की टीम के साथ आईसीएआर-सिफरी की वैज्ञानिक टीम ने 21-23 मार्च 2023 तक पिंजरा पालन के लिए उपयुक्त स्थल के चयन के लिए कंसावती जलाशय का दौरा किया।
- दिनांक 2-3 मार्च 2023 को डॉ. बी. मीनाकुमारी की अध्यक्षता में आईसीएआर-सिफरी के अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की गई।
- सिफरी की 51वीं संस्थान प्रबंधन समिति की बैठक 28 फरवरी 2023 को बैरकपुर में आयोजित की गई।
- दिनांक 15 मार्च 2023 को बैरकपुर में सीएसबी-सीटीआरटीआई, रांची के साथ संयुक्त रूप से वेस्ट टू वेल्थ उत्पाद रेशम कीड़ा प्यूपा आधारित मछली फीड पर संस्थान उद्योग इंटरफेस मीट का आयोजन किया गया। इस बैठक में दस फीड उद्योगों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- भाकृअनुप-सिफरी में दिनांक 20 मार्च 2023 को विद्यासागर महिला कॉलेज, कोलकाता, पश्चिम बंगाल की 32 छात्राओं के लिए "अंतर्स्थलीय खुले जल मत्स्य पालन पर अवसर" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।
- भाकृअनुप-सिफरी ने 21-27 मार्च, 2023 के दौरान दरभंगा, बिहार के किसानों के लिए "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर मत्स्य विभाग, बिहार सरकार प्रायोजित 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें बिहार के 30 मछली किसानों ने भाग लिया।

